बिहारेर सत्संग उद्‌दोलन

मनोमोहिनी सुतं देवं सर्व्वकारणकारणम्
नमामि परमानन्दं श्रीअनुकूलं जगद्‌गुरुम।।

बाबा! मुझे आपके पास बहुत मन लगता हैं, रख लीजिए न यहीं' – यह प्रार्थना करते हुए 9-10 वर्ष का एक बालक दक्षिणेश्वर में भगवान श्रीरामकृष्णदेव की सेवा में रहने लगा। बिहार के छपरा जिला के एक पिछड़ी जाति का यह निर्धन-निरक्षर बालक ही आगे चलकर 'लाटू महाराज' के नाम से रामकृष्णदेव का विख्यात भक्त बना। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ऐसे विद्वान भगवान रामकृष्णदेव को नहीं पहचान सके थे किन्तु इस निरक्षर बालक ने प्रभु को पहचान लिया। उसीप्रकार, कलकत्ता में मेडिकल की पढ़ाई के क्रम में वहाँ के विद्वान प्रभु-अनुकूल को नहीं पहचान पाए, किन्तु ग्रे-स्ट्रीट के कोयला मजदूर और सियालदह के कुलियों ने अपने 'प्राणेर-प्रभु' को पहचाना और नयनाभिराम प्रभु-अनुकूल को वे सभी ठाकुर कहकर श्रद्धा करने लगे।

अनुकूलावतार (1888 ई.) के बाद 'शिशु-अनुकूल' के दर्शनार्थ हिमायतपुर में साधु-सन्तों का यद्यपि ताँता लगा ही रहता था और कभी-कभी माँ-काली उन्हें स्वयं दूध पिलाती थीं किन्तु अद्वैताचार्य की 15 वीं पीढ़ी में उत्पन्न, पवना-शहर के शालगड़िया पल्ली के निवासी स्व0 सतीशचन्द्र गोस्वामी (गोसॉई-दा) ही सम्पूर्ण–बंगाल में 'अनुकूलायण' के प्रथम्-प्रसारक हैं। आपको स्वयं सद्‌गुरू प्रभु-अनुकूल से दीक्षा (ज्येष्ठ – 1914 ई.) का सौभाग्य प्राप्त है, चैतन्य महाप्रभु द्वारा रेखांकित 'गोस्वामी वंश' में आने के कारण आप स्वयं हजारों परिवार के कुलगुरू थे किन्तु अनुकूलाश्रित होते ही आपने अपने सभी शिष्यों को सद्‌गुरु-अनुकूल से युक्त करवाया और जगद्‌गुरु प्रभु-अनुकूल की '**वार्त्ता**' के प्रसार में स्वयं जीवन भर लगे रहे। भगवान शंकर ही रामकथा के प्रथम गायक हैं, भजनोपदेशक गोसॉई-दा को भी ठाकुर **'ऋत्विकाग्रगण्य'** कहते थे। 1962 ई. में देवघर में आपका देहावसान हुआ, आपके पौत्र ठाकुर-भक्त मनोज कुमार गोस्वामी सम्प्रति सोदपुर, कोलकाता में रहते हैं।

बिहार पहले बंगाल का ही हिस्सा था तथा कोलकाता-बंगाल ही सबसे बड़ा व्यावसायिक-क्षेत्र था, अतः हिन्दी-भाषी लोग बंगाल में पहले हजारों की संख्या में रहते थे, जिनमें से अनेकों ने प्रभु-अनुकूल का दर्शन किया था और कुछ लोगों ने प्रभु-अनुकूल की दीक्षा भी ली थी। बिहार-सपूत रत्नलाल शुक्ल ने अपनी नौकरी छोड़ कर महाराज अनन्तनाथ के माध्यम से 1917 ई. में ही प्रभु-अनुकूल की दीक्षा ली थी और कुष्टिया के treasury guard, बिहार के क्षत्रिय-कुलोद्‌भुत हरिवंश सिंह ने तो (आमलापाड़ा, कुष्टिया के अश्विनी विश्वास के निवास पर) 1918 ई. के पूर्व ठाकुर की भाव-समाधि भी देखी थी तथा उनके साथ वहाँ गये कुछ अन्य बिहारी-सिपाहियों को भी यह सौभाग्य मिला था। अरविन्द घोष के कनिष्ठ भ्राता वारीन्द्रकुमार घोष भी दीक्षित थे और देशबन्धु चितरंजन दास की सहायता से प्रकाशित होनेवाली 'नारायण' पत्रिका में उन्होनें 'पावनार मधुचक्र' नामक एक प्रबन्ध लिखा था जिसे पढ़कर अनेक विद्वानों ने भी दीक्षा ली, कोलकाता के सत्यभूषण डे के याजन से प्रभावित होकर भी अनेक लोग अनुकूलाश्रित हुए। बंगाल का हिस्सा होने के कारण, बिहार के सभी जिलों में पहले बड़ी संख्या में बंगाली-समाज रहते थे, जिनमें कुछ लोग युगावतार प्रभु-अनुकूल के शिष्य थे। बंगला-भाषी इन ठाकुर-भक्तों के सम्पर्क में आकर बिहार के स्थानीय लोग भी धीरे-धीरे दीक्षित होने लगे। मुजफ्फरपुर के ओवरसियर आशुतोष वन्दोपाध्याय, G.A.E.H. School, एस.डी.ओ. रोड, हाजीपुर के प्रख्यात प्रधानाध्यापक श्री भूषणचन्द्रनाथ (बाद में तपोवन, हिमायतपुर में आप प्रधानाध्यापक बने और काँग्रेसी-नेता वीरचन्द्र पटेल के बुलाने पर भी हाजीपुर नहीं लौटे), मुजफ्फरपुर सेन्ट्रल मेडिकल स्टोर्स के मालिक यतीन्द्रनाथ मुखर्जी एवं मन्मथनाथ मुखर्जी, समस्तीपुर के अधिवक्ता शैलेशनाथ बन्दोपाध्याय, धनबाद के श्यामाप्रसाद मुखोपाध्याय, वर्दमान के इन्दुभूषण रायचौधरी के बिहारवासी कुटुम्बगण, जमशेदपुर के नागेन्द्रनाथ सेन, कमलाक्ष सरकार, कानू राय, जयलालदा, अजित चक्रवर्त्ती, देवघर के सुरेन्द्रनाथ सेन, बनारस के फणिन्द्रनाथ भट्टाचार्य, कविराज अश्विनी कुमार दास, वकील हरप्रसन्न भट्टाचार्य, भागलपुर, के रेवती भट्टाचार्य आदि सैकड़ों बंगलाभाषी ठाकुर-भक्तों ने हिन्दी-प्रदेश और भारत में '**अनुकूलायण**' का प्रसार कर स्थानीय-लोगों को जगद्‌गुरु प्रभु-अनुकूल से युक्त करवाया। अपने सेवाकाल में जिला-जज सचिन गाँगुली और न्यायाधीश पी.के. बनर्जी ने भी बिहार में सत्‌नाम का खूब प्रसार

किया। भिले-पारले, मुम्बई के स्व0 चन्द्रकान्त पी0 मेहता एवं समस्तीपुर के बैद्यनाथ चौधरी ऐसे ठाकुर-भक्त तो 1946 ई0 के पूर्व ही हिमायतपुर जाकर जगद्गुरु-अनुकूल का दर्शन भी कर आये थे। रामभक्त जामवन्त के सम्पर्क में आकर किष्किन्धा के सम्पाती का उद्धार हुआ था और भक्त-हनुमान ने लंकापति-विभीषण को प्रभु से युक्त करवाया था, उसीप्रकार, बिहार सहित सम्पूर्ण भारत के लोगों को अधुनातन पुरुषोत्तम प्रभु-अनुकूल से युक्त करवाने वाले इन बंगला-भाषी भक्तों का नाम इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा।

कुष्टिया के '**विश्वगुरु महोत्सव**' (1918 ई.) के बाद बंगाल में ठाकुर-शिष्यों की संख्या चतुर्दिक बढ़ने लगी किन्तु त्रैलोक्यनाथ चक्रवर्ती ही बहिर्बंगाल में सत्संग-आन्दोलन के प्रथम-ध्वजाधारी हैं। गोसाँईदा की तरह आपको भी स्वयं सद्गुरु-अनुकूल से दीक्षा-ग्रहण (May 1920) का सौभाग्य प्राप्त है। ऋत्विक बनने (July 1920) के बाद बर्मा जाकर आपने सैंकड़ों-लोगों को युगादर्श प्रभु-अनुकूल से युक्त करवाया। बर्मा के ब्रजेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय और वहाँ पदस्थापित गोरखा-रेजिमेन्ट के ले0 चतुर्भुज उपाध्याय के ऋत्विक बनने के बाद तो वर्मा में रहनेवाले अधिकांश भारतीय दीक्षित हो गये और द्वितीय विश्व-युद्ध काल में बर्मा में युद्धरत British Force की प्रायः सभी टुकड़ियों और आजाद-हिन्द फौज में ठाकुर-भक्तों की संख्या सैंकड़ों में पहुँच गई। जापानी-वमवर्षा के समय करुणासिन्धु प्रभु-अनुकूल की कृपा से वर्मा के सत्संगियों की जिस चमत्कारिक-ढ़ंग से रक्षा हुई थी, वह एक अभूतपूर्व इतिहास है। ले0 उपाध्याय के माध्यम से वर्मा में दीक्षित गोरखा-सिपाही गंगाबहादुर थापा ने नेपाल लौटकर 'सत्नाम' का खूब प्रसार किया और समर उपाध्याय, कृष्ण सिटोला, जगदीश साह, आसिकलाल, नजरलाल आदि कर्मियों के कारण नेपाल में आज हजारों दीक्षित हैं। सेना की नौकरी छोड़कर युगादर्श का प्रसार करने वाले Capt. Manav chakravarty जी वहाँ बराबर जाते हैं तथा धुवी, कटधरा, कल्याणपुर आदि स्थानों में सत्संग-आश्रम भी स्थापित है। द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद अमेरिका के E.J. Spencer, Ray, A. Houserman आदि दर्जनों विदेशियों ने भी दीक्षा ली; ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, इटली आदि पश्चिमी देशों में भी ठाकुर-शिष्यों की संख्या अब बढ़ती जा रही है।

1942 ई. के स्वतंत्रता-आन्दोलन के बाद बिहार के सारण जिला के पाथरदेई ग्राम के क्रान्तिकारी रमाशंकर सिंह, B.A., 'गोलघर', छद्मनाम से, पुलिस को चकमा देकर, सन्यासीवेश में, हिमायतपुर पहुँचे और केष्टो-दा के माध्यम से दीक्षा लेकर वहीं रहने लगे। सत्संग की डोरी पकड़कर आजाद हिन्द फौज में भर्त्ती-हेतु वर्मा जाना ही उनकी दीक्षा का उद्देश्य था, किन्तु परमपिता को कोई कैसे धोखा दे सकता है? एकदिन एकान्त में ठाकुर ने उन्हें अपना छद्म-रूप त्यागकर पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण करने को कहा। प्रभु के भूतमहेश्वरत्त्व से अनभिज्ञ यह युवक पहले तो घबड़ा गया और भागना चाहा किन्तु प्रभुकृपा से वे संभल गए और पुलिस के निकट आत्मसमर्पण कर, पवना-ढाका होते हुए, पुलिस-हिरासत में बाँकीपुर-जेल, पटना पहुँचे। इधर, ठाकुर ने राजेन्द्रनाथ मजुमदार और भोलानाथ सरकार को भेजकर उन्हें जेल से मुक्त करवाया। रिहा होकर रमाशंकर सिंह हिमायतपुर में ही रहने लगे, इस खुशी की सूचना पाकर उनके आत्मीय-कुटुम्ब भी वहाँ गये और दीक्षित हुए, प्रभु-अनुकूल द्वारा गठित 'स्वस्ति-सेवक-वाहिनी' के रमाशंकर सिंह सक्रिय सदस्य बने और उपापदनाथ के साथ उन्होंने कुष्टिया में इसकी शाखा भी खोली। सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक-समस्याओं का समाधान करते हुए धर्म्मसम्मत सेवा-पोषण द्वारा परिवेश को स्वस्थ्य-सबल बनाने के उद्देश्य से **'स्वस्ति-सेवक-वाहिनी'** का गठन प्रभु-अनुकूल की एक अभिनव-परिकल्पना है, प्रभु के समक्ष 1942 ई. में इसका गठन हुआ था और उमापदनाथ, कमलापदनाथ सहित कुष्टिया-हिमायतपुर के दर्जनों युवकों ने केष्टो-दा के निर्देशन में अग्नि के समक्ष वैदिक-विधि से इसमें अपने जीवन की आहुति दी थी। शरत्चन्द्र कर्मकार इसके प्रथम् कमांडर थे और ले0 चतुर्भुज उपाध्याय इसके प्रशिक्षक थे। देश-दुनिया में इसका नियमानुकूल गठन विश्व-शांति की आज अनिवार्यता है। ठाकुर से मिलने गये श्यामाप्रसाद मुखर्जी और N.C. Chaterjee को (1939 ई.) ठाकुर ने उनकी पार्टी 'हिन्दूमहासभा' का नाम बदलकर **'आर्य महासभा'** रखने का सुझाव दिया था एवं साम्प्रदायिकता के आधार पर देश-विभाजन को रोकने के लिए हिन्दू-बहुल क्षेत्रों से हिन्दुओं को लाकर मुस्लिम-बहुल पू0 बंगाल, सिन्ध आदि प्रदेशों में बसाने की भी सलाह दी थी। बिहार से रमाशंकर सिंह दर्जनों हिन्दू-परिवार को प्रभु के आदेशानुसार वहाँ ले गये जिन्हें प्रभु ने पवना-हिमायतपुर क्षेत्र में बसाया। विधायक-पुरुषोत्तम सिर्फ सिद्धान्त ही नहीं देते, खुद करके भी बताते हैं। वर्त्तमान कश्मीर-समस्या का भी यही समाधान है। आमगोला, मुजफ्फरपुर का सत्संग-आश्रम, देवघर से भी पुराना है, ठाकुर-भक्त यतीन्द्रनाथ मुखर्जी ने 1917 ई. के आसपास दुल्लासाह से

आश्रम हेतु थोड़ी जमीन खरीदी थी, (उनके पुत्र द्वारा बाद में उसका विस्तार किया गया) किन्तु 1933 ई. में वर्मा से आये इष्टप्राण-गुरुभ्राता योगेशचन्द्र चक्रवर्त्ती, B.A., के मुजफ्फर-आगमन के बाद भगवान-बुद्ध के पदरज से पवित्र वैशाली के पूत-पुरातन-प्रांगण में वर्त्तमान तथागत् प्रभु-अनुकूल के धर्म-चक्र-प्रवर्त्तन का नवीन-संस्करण प्रारम्भ हुआ। योगेश-दा के सहयोग से मुजफ्फरपुर में आश्रम-भवन का निर्माण हुआ जो 1934 ई. के भूकम्प में भी नहीं गिरा। उनके माध्यम से नगरपालिकाध्यक्ष श्यामनन्दन सहाय, उपाध्यक्ष महेन्द्र प्रसाद आदि गणमान्य लोगों की दीक्षा हुई, श्यामनन्दन सहाय के सहयोग से आश्रम, रोड से भी जुड़ गया, योगेश-दा ही वहाँ के प्रथम ऋत्विक भी थे। दातव्य-औषधालय सहित 3-years matric-coaching course भी वे वहाँ चलाते थे, जिसमें पढ़कर 6 वर्ष के बदले 3 वर्ष में ही छात्र परीक्षा पास करते थे, 1938 ई. तक वहाँ से The Rescue नामक एक अंगरेजी पत्रिका भी निकलती थी, भूकम्प-पीड़ितों की भी आश्रम ने काफी सहायता की, जिसके धन-संग्रह हेतु योगेश-दा वर्मा भी गये थे। गाँधी-आश्रम मुहल्ला, हाजीपुर में स्व0 नन्दकिशोर प्रसाद के पुत्र नीरजजी के घर पर प्रभु की चरण-पादुका है किन्तु मुजफ्फरपुर-आश्रम में रखी प्रभु की चरण-पादुका लाने का श्रेय योगेश-दा को ही है। बटलर-कर्मचारी शम्भूनाथ साह और आसाम के सुधीर रंजन चौधरी के आश्रम-प्रवास (1953) के बाद मुजफ्फरपुर में दीक्षा और बढ़ चली। राय चन्द्रेश्वर शर्मा, गोपेन मल्लिक (1951) हरिबल्लभ नारायण, रामलगन शर्मा (1952) (दामोदर पंडित चैतन्य महाप्रभु के पार्षद थे, प्रभु-अनुकूल रामलगन शर्मा को दामोदर कहकर पुकारते थे) सूर्यनारायण शर्मा, योगेन्द्र सिंह, रामेश्वर सिंह, शम्भू प्रसाद, दामोदर ठाकुर, गौतम ठाकुर आदि सैंकड़ों छात्रों की दीक्षा हुई जिसमें से कुछ लोग वहीं आश्रम में रहकर ही पढ़ते थे।

बाँकीपुर-जेल में रमाशंकर सिंह के याजन से प्रभावित होकर रिविलगंज, छपरा के सिरसिया ग्रामवासी काँग्रेसी, जगदीश नारायण श्रीवास्तव ने हिमायतपुर जाकर बड़-दा के माध्यम से दीक्षा ली, देवघर-आश्रम से आपने भारती-नामक त्रैमासिक का सम्पादन किया जो दुर्भाग्यपूर्ण ढ़ंग से कुछ ही दिनों में बन्द हो गया किन्तु फारसी के जानकार जगदीश ना0 श्रीवास्तव द्वारा हिन्दी में रचित और Satsang Publishing House द्वारा 1954 ई. में प्रकाशित प्रभु-अनुकूल की जीवनी-**पुरुषोत्तम** एक अमूल्य-ग्रन्थ है, जिसके बाद के संस्करणों में प्रकाशक ने कुछ गलत हेराफेरी की हैं, यह ग्रन्थ अभी अप्राप्य भी है, इस मूल-ग्रन्थ के प्रकाशन की हमें व्यवस्था करनी है।

समस्तीपुर के किशोरी मोहन बन्दोपाध्याय की कन्या हेमप्रभा-माँ बाल्य-विधवा थीं, एकदिन स्वप्न में उन्हें विष्णु-अवतार प्रभु-अनुकूल का दर्शन हुआ, अपने भाई, पटना में कानून के छात्र, शैलेशनाथ बन्दोपाध्याय के साथ वे हिमायतपुर गईं और दीक्षा लेकर वहीं रह गईं। 'माता मनोमोहिनीदेवी' नामक ग्रन्थ को पढ़कर शैलेश-दा भी प्रभावित हुए तथा महाराज अनन्तनाथ के माध्यम से आपने भी दीक्षा ले ली। 1934 ई. के पूर्व शैलेश-दा ने वकालत प्रारम्भ किया था किन्तु अनुकूलाश्रित होने के बाद याजन में आपका मन लगने लगा और 'अनुकूलायण' के प्रसार में अब आप ज्यादा समय देने लगे। ऋत्विक बनकर Tata Steel के कर्मचारी नागेन्द्रनाथ सेन और कमलाक्ष-सरकार के साथ आपने जमशेदपुर में खूब प्रसार किया। 1941 ई. में चुनीलाल रायचौधरी के माध्यम से टाटा के अजित चक्रवर्त्ती की दीक्षा के बाद वहाँ दीक्षा बढ़ने लगी और टाटा सत्संग-आन्दोलन का एक प्रधान-क्षेत्र बन गया, Tata Steel के सहयोग से वहाँ गोलमुड़ी-मैदान में युगादर्श प्रभु-अनुकूल का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया जाने लगा; वीरेन्द्रनाथ पंड्या, पालित-दा, भवानी-दा, अमियरंजन-दा, निरंजन सरकार, प्रताप पुष्टि, किरणचन्द्र दास, ए0के0 मुखर्जी, जतीन्द्र बसु आदि सैंकड़ों परिवार वहाँ ठाकुर से युक्त हुए। इधर याजन करते-करते शैलेश-दा भी जीवनदानी हो गये तथा हिलसा के डॉ0 सुरेन्द्रनाथ मोदक ऐसे बंगला-भाषी सत्संगियों की डोरी पकड़कर बिहार के विभिन्न-क्षेत्रों में युगादर्श प्रभु-अनुकूल की सर्व्वसमस्या-समाधानी नीति-विधियों का आप प्रसार करने लगे। बिहार में '**अनुकूलायण**' का प्रसार करने में शैलेश-दा की तपस्या स्मरणीय और वन्दनीय है। प्रभु के देवघर-आगमन (2nd Sept. 1946) के बाद बिहार सहित सम्पूर्ण भारत में तथागत-अनुकूल का धर्म-रथ तेज गति से दौड़ने लगा। पूर्ववर्त्ती पुरुषोत्तमों की श्रद्धा करते हुए अधुनातन पुरुषोत्तम का अनुशरण ही 'धर्मं शरणं गच्छामि' है, इस मूल-सत्य को समझते हुए बिहारवासी हजारों की संख्या में latest prophet प्रभु-अनुकूल की दीक्षा लेकर अनुकुलाश्रित होने लगे। 'वृन्दावन परित्येज्य पादमेकं न गच्छामि', धर्म्मसंस्थापनार्थ अवतरित पुरुषोत्तम की इच्छा अमोघ होती है, लोकोद्धार के अपने संकल्प से वे कभी विच्युत नहीं होते। उन्हें

चाहे गाय चराना पड़े या भेड़, मक्का से मदिना भागना पड़े या अपनी जन्मभूमि छोड़कर देवघर आना पड़े, हर परिस्थिति में धर्म के बीज को वे समाज में संस्थापित करते ही हैं। 1947 ई. में देवघर-आश्रम में सप्ताहभर चलनेवाला, 'महामंगल-यज्ञ', कुछ स्थानीय विधर्मियों की हुल्लड़बाजी के बावजूद, सफलतापूर्वक सम्पादित हुआ जिसमें पूर्व्वोत्तर राज्यों सहित बिहार के हजारों लोगों ने भाग लिया। भगवान-राम के दर्शनार्थ चित्रकुट में लोगों की भीड़ रोज जुटती थी, उसीप्रकार अधुनातन-पुरुषोत्तम प्रभु-अनुकूल के दर्शनार्थ भी सत्संग-आश्रम, देवघर में सैकड़ों की संख्या में लोग आने लगे। महाराष्ट्र, गुजरात, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल आदि दक्षिणी राज्यों से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने आना प्रारम्भ किया। मुम्बई के प्रीतमराय ढ़ोलकिया, अरुण सेन, इन्द्रजीत भाई ढ़ोलकिया, कृष्णभाई देशाई, गोपाल भाई देशाई, विपिन भाई ढ़ोलकिया, गोविन्द भगत, रमण मिस्त्री, काशीनाथ मिस्त्री, अहमदाबाद के शांति भाई क्लार्क, किशोर क्लार्क, हैदराबाद के अमृतभाई देशाई आदि सैंकड़ों लोगों ने दीक्षा ली और प्रभु के दर्शनार्थ देवघर आने लगे। सर्व्वसत्ताकर्षक तथागत-अनुकूल के समक्ष आयोजित होने वाले वार्षिक अधिवेशनों (April Conference and October conference) में तो सम्पूर्ण भारत से श्रद्धालुओं की भीड़ जुटती थी तथा उड़िसा-बंगाल से गुरुभाई लोग Special-train लेकर भी आते थे। 1953 ई. के पूजा-उत्सव में ही 14 विशेष रेल-गाड़ियाँ आयी थीं। इन अधिवेशनों में पूर्व्वोत्तर-राज्यों से विधायक, मंत्री, राज्यपाल, कुलपति, लेखक, पत्रकार आदि बड़ी संख्या में आते थे और बिहार के मुख्यमंत्री डॉ0 श्रीकृष्ण सिंह सहित अनुग्रह नारायण सिंह, वीरचन्द्र पटेल, के0वी0 सहाय, पं0 विनोदानन्द झा, जगतनारायण लाल, पत्रकार मुरली मनोहर प्रसाद, लक्ष्मी नारायण सुधांशु, रामप्यारी देवी, सुन्दरी देवी, प्रतिभा देवी, कर्पूरी ठाकुर, वसावन सिंह आदि मंत्री, विधायक भी इसमें सम्मिलित होते थे। विद्वान लेखक डॉ0 हजारी प्र0 द्विवेदी, राज्यपाल डॉ0 अनन्त शयनम् आयंगर, Advocate General बलदेव प्रसाद ने तो प्रभु का कई बार दर्शन किया ही था, गुलजारी लाल नन्दा, लाल बहादुर शास्त्री, रामसुभग सिंह आदि केन्द्रीय-मंत्रियों ने भी तथागत-अनुकूल का दर्शन किया, प्रभु के दुमका-प्रवास (1952 ई.) के बाद दुमका-क्षेत्र में भी हजारों लोग दीक्षित हुए। चित्रकूट और पंचवटी जाकर त्रेता के राम ने अत्रि आदि मुनियों सहित विन्ध्य-देश के हजारों लोगों का उद्धार किया था, उसी प्रकार नव-वृन्दावन हिमायतपुर के नव-कृष्ण कल्कि-अवतार प्रभु-अनुकूल ने देवघर आकर सम्पूर्ण भारतवासियों का उद्धार किया। ठाकुर-भक्त उमाचरण प्रसाद के याजन से प्रभावित होकर समस्तीपुर के प्रधानाध्यापक हरिनन्दन प्रसाद (1950) और विद्वान-शिक्षक चित्रनारायण लाल की दीक्षा (1953) के बाद समस्तीपुर में भी प्रभु का प्रसार तेज हो गया और दीक्षितों की संख्या बढ़ चली। हरिनन्दन बाबू के ऋत्विक बनने (1952) के बाद तो छात्रों में भी काफी दीक्षा हुई, प्रभु के दर्शनार्थ उनके साथ 40–50 छात्र बराबर देवघर जाया करते थे। आनन्दी साह, सियाशरण झा, राजेन्द्र प्र0 सिंह, कामेश्वर प्रसाद, तपेश्वर प्रसाद आदि सैंकड़ों ने दीक्षा ली, February 1953 ई. में दीक्षा लेकर रामधनी दास 'विमल' देवघर में काफी दिनों तक रहे, बाद में हरिनन्दन बाबू भी सपरिवार स्थायी रूप से वहाँ रहने लगे और उनके प्रयास से दीक्षा लेकर मसनोडीह के अवरख खान मालिक बैकुन्ठ प्र0 सिंह भी देवघर आ गये। चित्रनारायण बाबू के ऋत्विक बनने (1954) के बाद उनके माध्यम से वान्दे ग्रामवासी श्री महेश्वर पाण्डेय (1956) एवं उनके भ्रातृज ब्रजकिशोर पाण्डेय (1957), समस्तीपुर के डॉ0 रामानन्द मेहता, चन्द्रभूषण चौधरी, श्री तृप्तिनारायण चौधरी, ब्रजकिशोर नारायण सिंह (1964) रमेश प्रसाद सिंह आदि अधिवक्ताओं की दीक्षा हुई। सत्यदेव प्रसाद ने दीक्षा (1955) लेकर रीगा-सीतामढ़ी में खूब काम किया। ठाकुर समस्तीपुर को 'समष्टिपुर' कहते थे और यहाँ के लोगों को 'समष्टिपुरेर ओरा' कहकर प्यार करते थे। हरिनन्दन बाबू से एकदिन ठाकुर ने 'समस्तीपुर' शब्द का अर्थ पूछा। हरिनन्दन बाबू ने कहा – जो सभी को लेकर चले, इसपर प्रभु ने कहा कि 'आमि बुझि, या 'समष्टि के प्रतिनिधित्व करे, ताइ ह'लो समष्टिपुर', इसी क्रम में प्रभु ने कहा कि – 'समष्टिपुर एकदिन सत्संगेर प्रधान केन्द्र ह'वे।' वान्दे ग्रामवासी श्री महेश्वर पाण्डेय् को December 1964 में प्रभु ने भीक्षाकर पचास हजार रूपये देने का आर्शीवाद दिया था, जिसका संग्रह करने में समष्टिपुर के सत्संगियों ने जी-जान लगा दिया और March 1966 में श्री महेश्वर पाण्डेय् ने उपरोक्त रकम प्रभु की आज्ञा से, प्रभु के समक्ष, प्रो0 अरूणादित्य मुखोपाध्याय को सुपुर्द कर दिया। 'स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्' – माँ सीता का पता लगाने के क्रम में हनुमानादि भक्तों को भगवान राम की भगवत्ता की अनुभूति हुई थी, पूर्वकृत-दोष का समन हुआ था और किष्किन्धा-लँका के लोग भी रामशरणापन्न हुए थे। उसीप्रकार, सुख के धाम प्रभु-अनुकूल की

आज्ञापालन के क्रम में प्रभु की भगवत्ता की अनुभूति से समष्टिपुर के भक्तों के दुःख का तो समन हुआ ही, 'प्रीति-संगति और प्रीति-संहति' के अभ्यास से प्रभु का गुणगान भी यहाँ बढ़ चला। शिक्षक अचलदेव नारायण, ज्वाला प्रसाद सिंह, रामपदारथ सिंह, नारायण प्रसाद, शालिग्राम सिंह, सिंहेश्वर साह आदि सैंकड़ों लोग ठाकुर से युक्त हुए। दरभंगा के धीरेन्द्र मोहन प्रसाद ने अपने सेवा-काल में राँची में खूब याजन किया और अपने पुत्र काशी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ0 ए0 प्रसाद के साथ मिलकर आपने दीक्षा-शिक्षा-विवाह पर विभिन्न ग्रन्थों का प्रकाशन भी किया। बनारस (छोटी पियरी) में बहुत पहले से सत्संग-आश्रम की एक शाखा भी है, जहाँ रहकर आसाम के सुधीर रंजन चौधरी ने कुछ वर्षों तक वहाँ याजन किया था।

मात्र भौतिक-विकास ही उन्नति नहीं है, बल्कि व्यक्ति-परिवार और समाज का इष्टोन्मुख-अभ्यास ही उन्नति का मूलाधार है, युगादर्शानुसरण ही विकास का Zygote है। बिहार (झारखंड) अखंड-बंगाल-उड़ीसा-मध्यप्रदेश (छत्तीशगढ़) के खनिज-बहुल आदिवासी क्षेत्र को इष्टोन्मुख बनाकर 'पवना-पटना को एक' करते हुए समाज के चतुर्दिक्-विकास हेतु '**बंग-मगध-परिकल्पना**' तथा '**डरबा में गंगोत्तरण**' (The Ganges greet Darwa) अधुनातन-पुरुषोत्तम की अभिनव-परिकल्पना है। 'डरबा में गंगोत्तरण' हेतु प्रभु ने 'एक कोटि मानुष, तीन कोटि टाका'— का नारा दिया था, जो विकास के Zygote-निर्माण को ही रेखांकित करता है। व्यक्ति के सहजात-संस्कार अनुपातिक इष्टकेन्द्रिक-शिक्षा हेतु वशिष्ठाश्रम की तरह प्रभु-अनुकूल गोत्रकार ऋषियों के नाम पर विश्वविद्यालयों की स्थापना के पक्षधर थे, शाण्डिल्य विश्वविद्यालय की स्थापना का कार्यक्रम सत्संग में शुरु भी हुआ था, जिसे अभी पूरा होना है।

विश्व में सर्वप्रथम समष्टिपुर में ही प्रभु-अनुकूल का मन्दिर स्थापित हुआ है। सारी ग्राम के क्षत्रिय-कुलोद्भुत ठाकुर-भक्त ब्रजकिशोर नारायण सिंह की कल्पना और सभी सत्संगियों के सहयोग से समस्तीपुर जिला के शाहपुर पटोरी स्टेशन से 4 कि.मी. उत्तर स्थित वान्दे ग्राम में संगमरमर की बनारस में निर्मित प्रभु-अनुकूल की प्रतिमा वैदिक-विधि से February 1973 में स्थापित की गई, इस प्राण-प्रतिष्ठा समारोह में प्रभु के द्वितीय पुत्र स्व0 विवेक रंजन चक्रवर्त्ती उपस्थित थे।

आज विश्व की समस्याओं का निदान भौतिक-आर्थिक-राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में ढूँढ़ा जा रहा है किन्तु भौतिक-शक्ति विश्व का नियामक नहीं है, सृष्टि-क्रोड़ में अवस्थित आध्यात्मिक-शक्ति ही इस विश्व का नियंत्रक है, अतः धर्माचरण ही समस्याओं से मुक्ति का सुगम-पथ है। कुअभ्यास के कारण हम आज धर्म का सही अर्थ भूल गये हैं, हनुमान और अबूबकर की तरह युगादर्शानुसरण ही धर्म है। युगादर्श की अवज्ञा करके धर्म नाम पर की जा रही प्रत्येक क्रिया प्रगति को शिथिल कर आदमी को दिशाहीन कर देती है। धर्म की अवमानना और धर्म नाम पर विकृत-धर्माभ्यास जीवन और जगत में पायी जानेवाली सभी समस्याओं का मूल कारण है। अयोध्या-प्रयाग, मथुरा-वृन्दावन, मक्का-जेरूजेलम में एक ओर भीड़ बढ़ती जा रही है, दूसरी ओर दुनिया में पाप भी उसी रफ्तार में बढ़ रहा है। धर्मान्तरण और धर्म नाम पर इस्लामी-आतंक, सहस्र-शीर्षा राक्षस की तरह आज दुनिया की सभी शिष्टताओं को भस्म कर रहे हैं। कोई निराकारी है तो कोई वाममार्गी, कोई पत्थरों की पूजा करते-करते परेशान है, तो कोई विगत-पुरुषोत्तमों की अविध-पूजा में मसगूल है। दुनिया में मन्दिर-मस्जिदों की संख्या रोज बढ़ रही है किन्तु उनमें सजदा करके लौटनेवाले अपने को प्रगतिहारा और हतोत्साहित महसूस करते हैं, सम्प्रदाय में बदलकर यह धर्म आज रोज सैकड़ों की हत्या कर रहा है, दुर्गा-काली-गणेश-महादेव की पूजा में लाखों रूपये खर्च करके हम अपने को ठगा सा महसूस करते हैं। सुख-शांति की राह दिखाने वाला यह धर्म आज मौत का सौदागर क्यों बन गया है ? इसका एकमात्र कारण यही है कि हम धर्म का सही अर्थ भूल गये हैं। युगादर्श की अवज्ञा कर, पूर्व गुरुओं की हो रही सभी पूजा अवैध और अज्ञता का व्यंजक है। हमें धर्म का सही अर्थ समझना होगा। विवेकानन्द की तरह सद्गुरु-शरणापन्न होना ही धर्माचरण है, युग-पुरुष को छोड़कर की जा रही सभी प्रकार की ईश्वरोपासना हमें ईश्वर से दूर ढ़केलती है। 'क्लेषोधिक' और 'अविध' होने के कारण Bible और कुरान भी निराकार की उपासना को सफलता का अव्यावहारिका-पथ कहते हैं, उपासनाा-पद्धति को बहुआयामी बनाकर तथा धर्म को 'बूत-पूजा' में घसीटकर आकाशी-भगवान की उपासना विभिन्न समस्याओं को उभाड़ती है। भगवान राम, योगेश्वर कृष्ण ऐसे एक solved man का अनुसरण ही उन्नति और सफलता का

सुगम-पथ है। राम-कृष्ण-बुद्ध-यीशु-मुहम्मद-चैतन्य-रामकृष्णानुकूल आदि पुरुषोत्तमों के रूप में ईश्वर इस धराधाम पर प्रत्येक युग में आते हैं। त्रेता के राम और द्वापर के कृष्ण की तरह सभी युगावतार अपने युग के जगद्गुरु होते हैं, समसामयिक-समस्याओं का निदान युगादर्श ही बताते हैं। चरक-संहिता आज की बीमारी को ठीक नहीं कर सकती, उसी प्रकार पूर्व के गुरुओं की उपासना में समाज की सामयिक-समस्या का निदान ढूंढ़ना अव्यावहारिक है। चिकित्सा की वर्त्तमान पुस्तक प्राचीन चिकित्सा-ग्रन्थों का ही नवीन-संस्करण है, उसीप्रकार युगावतार की कथा पूर्ववर्त्ती सभी गुरुओं की नीतियों से एकसूत्र-संगत और युगोपयोगी है, अतः युगादर्शानुसरण में पूर्ववर्त्ती सभी गुरुओं की पूजा तो समाहित है ही, युगादर्श का अनुसरण ही सफलता का राजपथ भी है। पूर्व के सभी गुरुओं की श्रद्धा करते हुए युगादर्श प्रभु–अनुकूल का अनुसरण ही धर्माचरण है, 'नान्यः पन्था'। युगपुरुषोत्तम को छोड़कर, धर्म नाम पर हो रहा सभी अनुष्ठान, धर्म को धर्माडम्बर में बदलकर व्यक्ति और समाज को Callous (बोधशक्ति रहित) बना देता है। भविष्य में आगत पुरुषोत्तम के अभ्युत्थान के पूर्व तक latest prophet प्रभुअनुकूल ही दुनिया में सबों के गुरु, आचार्य, विधायक, इष्ट और उपास्य हैं–इस सत्य को हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। युग-पुरुष प्रभुअनुकूल की अवहेलना करके, इस 'अनुकूल-युग' में, विगत-पुरुषोत्तम या अन्य किसी दूसरे मानव-गुरु वा मानव-आचार्य का अनुगमन हमारे विवर्त्तनी-सम्वेग को शिथिल कर हमें विपथगामी बनाता है।

इष्टस्वार्थी गुरु ना ह'ले
गुरुइ से तो नय,
अनुसरणे ता'के जानिस्
आछेइ अनेक भय। (–अनुश्रुति खंड–1, आदर्श– 19)

'I come to fulfil and not to destroy' में holy Bible कहता है कि पूर्ववर्त्ती-पुरुषोत्तमों का विवर्त्तित-रूप होने के कारण युगादर्श की नीतियाँ पूर्व के सभी पुरुषोत्तमों से अंगांगिभावेन जुड़ी होती हैं अतः पुरुषोत्तमों के नाम पर सम्प्रदाय बनाना पुरुषोत्तम के खिलाफ खडयंत्र है। None can come to the father but through me का Biblical order हमें सावधान करता है कि युगादर्श की अवहेलना सफलता का अन्तराय है। व्यक्ति-परिवार-समाज और राष्ट्रोन्नयन हेतु अधुनातन पुरुषोत्तम प्रभु-अनुकूल का अनुसरण आज के युग की क्रान्तिकारी माँग है। 'मामेकं शरणं व्रज' का भी यही आदेश है।मनोमोहिनी-नन्दन प्रभु-अनुकूल को नहीं जानना और नहीं मानना, पूर्ववर्त्ती-गुरुओं का अनादर तो है ही, समस्याओं के बढ़ते अम्बार का कारण भी है। प्रभु-अनुकूल ही इस युग के सर्व्वशेषावतार हैं and Thakur's testament is the summation of all the past prophet इस युग में '**अनुकूलं शरणं गच्छामि**' के बिना 'धर्मं शरणं गच्छामि' सम्भव हीं नही है। युगादर्श से विमुख लोगों को ही कुरान काफिर कहता है और 'अल्लाह काफिर को राह नहीं दिखाता' (कुरान 10.09.23)। मुहम्मद को कुरान 'खात्मेनवी' कहता है, अर्थात् अगले दिन सूर्योदय नहीं होने तक आज का सूर्य ही इदानीन्तन सर्वशेष सूर्य है, अतः युगादर्श ही कुरान का खात्मेनवी है। व्यक्ति-परिवार और समाजोन्नयन की प्राचीन-गर्भी यह '**अनुकूलवार्त्ता**' स्वर्णिम-भविष्य का सृजनी-टकसाल और key of the age है। युगादर्शानुसरण में व्रती लोगों की संख्यावृद्धि से ही दुःख का अमावश समाप्त होगा और सुख की पूर्णिमा प्रारम्भ होगी तथा 'संगच्छध्वं संवद्ध्वं संवो मनांसि जानताम्' भी तभी होगा। अखंड-बंगाल के पद्मातीर से उठनेवाला '**अनुकूलायण**' का यह शंखनाद divine fulfilment of all ism तथा message of hope है। प्रभु के पांचजन्य का यह जयघोष दिग्-दिगन्त को मुखारित कर समाज को प्लावित करता हुआ आज समग्र-विश्व में सहज रूप से प्रसारित हो रहा है, जाति-देश-सम्प्रदाय-निरपेक्ष हिन्दू-मुस्लिम-ईसाई आदि दुनिया के सभी सम्प्रदाय के सत्ताकामी, युगादर्शानुसरण की पताका के नीचे संघवद्ध हो रहे हैं। **सत्संग** न हिन्दू जानता है न मुसलमान, वह न फ्रांस जानता है, न पाकिस्तान, दुनिया के प्रत्येक सत्ताकामी पुण्यात्माओं का यह अपना घर है, एकादर्शानुसरण ही इसका मूलोद्देश्य है, किन्तु स्वार्थ, अहंकार और नासमझी के कारण, अपने अभ्यास-प्रसार और व्याख्या में कुछ लोग प्रभु-अनुकूल की वाणियों को विकृत कर, अस्ति-वृद्धि की इस मन्दाकिनी को वहाँ गँदा कर रहे हैं, वहाँ इष्टभृति के मंत्र बदल दिये गये हैं, उसके प्रेषण की विधियाँ गलत हैं, भूत-यज्ञ और भ्रातृ-भोज्य इष्टभृति का आनुषंगिक-भाग है, जिसका हम निवेदन ही नहीं करते। समवेत-प्रार्थना के प्रभु-निर्देशित-क्रम में तोड़-जोड़ किया जा रहा है। उत्सव का अर्थ Vigorous याजन है किन्तु सत्संग-उत्सव आज मेला बन गया है जहाँ याजन प्रायः होता ही नहीं। प्रभु की वाणियाँ जीवन-वर्द्धन के वैज्ञानिक-सूत्र हैं किन्तु इन वाणियों के तथ्यों को वहाँ तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया जाता है तथा प्रभु के ग्रन्थों में हेराफेरी कर श्रुतियों को विकृत किया जा रहा है। निरर्थक टुकड़ों में बँटे सत्संग के सभी धड़े प्रभु के मूलोद्येश्य से भटककर हृदयहीन होते जा रहे हैं जहाँ

सुविवाह-सुप्रजनन और सुशिक्षा की प्रभु-निर्देशित नीतियों को रूपायित करने की हमें कोई चिन्ता ही नहीं है, प्रतिलोम-विवाह विध्वंस का कर्कश-निनाद है किन्तु इस कुकर्म को प्रश्रय देने वाले वहाँ ऋत्विक बने हैं। ठाकुर भक्त, सिद्ध-ऋत्विक ही मंत्रदान के प्रकृत अधिकारी हैं।

'सिद्ध नय मंत्र देय
मरे मारे करेइ क्षय।' (–अनु0, खंड–1, आदर्श– 64)

प्रभु की इस सावधान-वाणी की खिल्ली उड़ाते हुए, व्यावसायिक-ऐजेन्ट की तरह असिद्ध-लोग सत्संग में ऋत्विक बन रहे हैं। 'पुरुषोत्तमेर अवर्त्तमाने' '..... युग-पुरुषोत्तमेर भावे भावित, अनुरंजित, निष्ठावान, आचारवान, तद्‌गतचित्त ऋत्विकेर काछ थेके ऐ पुरुषोत्तम-प्रवर्त्तित दीक्षाय दीक्षित हेये ऐ पुरुषोत्तमकेइ मेने ताँर पथे चलवे-।'(–आ0प्र0, 10/3.1.1948), किन्तु सत्संग में ऐसे ऋत्विक आज बहुत कम हैं, साथ ही पुरुषोत्तम-प्रवर्त्तित-दीक्षा-पद्धति को भी वहाँ बदला जा रहा है और पुरुषोत्तम-वंशधरों को living Ideal तथा आचार्य के रूप में चित्रित करने का अशास्त्रीय-प्रयास चल रहा है।

'आचार्य्य छेड़े, आचार्य्य ध'रलि –
मूर्खताते दिलि पा,
ज्ञानेर बुके मारलि छुरि
लाभ ह'ल तोर धृष्टता।' (–अनु0, खंड–7, साधना–30)

उपासना-वेदी पर उपास्यगुरु प्रभु अनुकूल की छवि के साथ पुरुषोत्तम–वंशधारो का फोटो रखना एक अवैज्ञानिक क्रिया है, इससे निष्ठा खण्डित होती है और साधना विकृत होती है। प्रभु की सावधान वाणी देखें –

सावधान थेको –
नकल प्रेरितदेर थेके,
ता'रा तोमार काछे
नम्र मेषेर वेशेइ आसवे हयतो,
किन्तु अन्तरे ता'रा
हिंस्र शाद्‌र्दलेर मत, ...।' (–आ0 विनायक, वाणी सं0–105)

उपरोक्त वाणियों के सन्दर्भ में नकली आचार्य्य से सावधान रहकर हमें यह अच्छी तरह समझलेना चाहिए कि जैसे द्वापर में कृष्ण आचार्य्य थे, उसी प्रकार इस 'अनुकूल-युग' में गुरु, आचार्य्य, इष्ट, परमप्रिय, प्रेरित-पुरुष, और उपास्य युगादर्श अनुकूलचन्द्रजी हीं हैं, दूसरा कोई नहीं। प्रभु का आदेश है––

'..... एवं सर्व्वावस्थाय पुरुषोत्तमइ
उपास्य ओ इष्ट–––मानुषेर .....।' (–आ0 विनायक, वाणी सं0–64)

शिक्षा-गुरु अनेक हो सकते हैं, किन्तु इस कलिकाल में उपास्य-गुरु एकमात्र ठाकुर ही हैं––

'शिक्षागुरु थाक् ना अनेक
शिखो येमन पार,
इष्टगुरु एकइ किन्तु
निष्ठा-सह धर।' (–अनुश्रुति, खंड–6, धर्म–43)

मित्रामित्रवल्लभ प्रभु-अनुकूल को इष्ट मानने वाले निष्ठावान, आचारवान, तद्‌गतचित्त, पुरुषोत्तम-वंशधर एवं इस प्रकार के गुणवान कृष्टि-सन्तान हम दीक्षितों की सम्बर्द्धना के साथी हैं। वे मंत्रदाता, शिक्षा-गुरु, उपाध्याय-गुरु, वाचक-आचार्य्य आदि उपदेष्टा हो सकते हैं किन्तु आपूरयमाण-आचार्य्य, उपास्य-गुरु और इष्ट एकमात्र पुरुषोत्तम ही होते हैं।

आगत यिनि, उपस्थित यिनि –
तॉ'र विगतिते वा तिरोभावे
तॉर वंशे यदि
तॉ'ते अच्युत-सश्रद्ध-आनति-सम्पन्न,
प्रबुद्ध-सेवाप्राण
तत्‌विधि ओ नीतिर सुष्ठु परिचारक ओ परिपालक,
सानुकम्पी-चर्य्यानिरत, समन्वयी सामंजस्य प्रधान,
पदनिर्लोभ, अद्रोही, शिष्ट-नियंत्रक,
प्रीतिप्राण–एमनतर – केउ थाकेन –
तॉरइ अनुगमन क'रो –
किंवा ता'ओ यदि ना पाओ –
तबे तॉर कृष्टि–सन्ततिर भितर
अमनतर गुणसम्पन्न यिनि
तॉरइ अनुगमन क'रो –पारम्पर्य्ये, –
यतक्षण आवार आगतेर अभ्युत्थान ना हय .....।'
(–सम्विती, प्रथम खण्ड, आदर्श , वाणी सं– 39)

उपरोक्त वाणी के 'अनुगमन' शब्द का अर्थ उपासना नहीं है, 'आचार्य्यं मां विजानियात्' और 'अहं हि सर्व्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च' आदि भगवदीय वचनों के अनुसार सर्वावस्था में पुरुषोतम ही मनुष्य के उपास्य और इष्ट हैं किन्तु इष्टोपासना के पथ पर एक योग्य शिक्षक की सहायता लेना ईश्वरोपासना की व्यावहारिक जरूरत है अतः 'पुरुषोत्तमेर अवर्त्तमाने', युगादर्शानुगामी पुरुषोत्तमवंशधर किंबा पुरुषोत्तम के कृष्टि संतान में से एक शिष्ट-सदाचारी, आत्मनियामक, असत्-निरोधी, निर्द्वन्द, स्वाध्यायी दीक्षा-गुरु से ठाकुर की नियमानुकूल दीक्षा लेकर मंत्रदाता ऋत्विक की श्रद्धा करते हुए युगादर्श प्रभु-अनुकूल का अनुसरण करना ही धर्माचरण है, किन्तु मंत्रदाता मानवगुरु, चाहे वे किसी भी स्तर के क्यों न हो, दीक्षा-दान के समय यदि यह नहीं कहें कि –

'सद्गुरु, आचार्य वा पुरुषोत्तम पेलेइ
दीक्षा ग्रहण क'रवे
तॉ'दिगके जानवे
ताह'ले से-दीक्षा व्यर्थ, पुरश्चरणहीन ; ..... (–आदर्श विनायक, वाणी संख्या – 186)

ईश्वर-प्राप्ति एक विज्ञान है और विज्ञान के नियम का आचरण ही सुफलदायी है, हमें भ्रमित नहीं होना चाहिए।

इष्टगुरु-पुरुषोत्तम
प्रतीक गुरुवंशधर
रेत-शरीरे सुप्त थेके
ज्यान्त तिनि निरन्तर (–अनुश्रुति, खंड–1, प्र0 संस्करण, धर्म–69)

(नोट– अनुश्रुति पुस्तक के बाद के संस्करणों में प्रकाशक ने गलत हेराफेरी कर इस वाणी को विकृत कर दिया है।) इस वाणी का सीधा अर्थ यही है कि औरसजात होने के कारण पुत्र अपने पिता का प्रतीक होता है, ठाकुरवंशधर सभी महानुभाव हमारे इष्टगुरु-ठाकुर के प्रतीक हैं, जिन्हें देखकर ठाकुर का स्मरण जीव विज्ञान का एक सामान्य सत्य है। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि ठाकुरवंशधर हमारे इष्ट और अनुशरणीय हैं। रधुवंशियों को देखकर आज भी भगवान राम याद आते हैं, किन्तु भगवान राम के स्थान पर हम इन रधुवंशियों की तो पूजा नहीं करते।

पुरुषोत्तम किंवा इष्टजनेर
थाकले वंशे शिष्ट केउ,
तिनिइ किन्तु स्वतः नियन्ता
जीवन-यागेर धृति-ढेउ। (–अनुश्रुति, खंड–4, आदर्श–48)

इतिहास में यद्यपि इसका उदाहरण नहीं मिलता किन्तु इष्टगुरु-पुरुषोत्तम ठाकुर अनुकूलचन्द्रजी के वंशधरों में पुरुषोत्तम-भाव में भावित, निष्ठावान, आचारवान, शिष्ट-सज्जन हमारे इष्टोपासना में सहायक होगें, इसमें संदेह कहाँ है? 'डकैत रत्नाकर और Rogue Augustine जब संत हो सकते हैं तो ये महानुभाव क्यों नहीं हो सकते? किन्तु पुरुषोत्तम ''निजेर परिवार ओ परिवेशेइ लांक्षित ह'ये थाकेन प्रायशःइ,.....।'' (–आ0वि0, वाणी–112)

''..... एवं यिनि तॉ'के यतटा अनुसरण करेन
सश्रद्ध अनुचर्य्याय, –
तॉ'र उपदेश ततटा ग्राह्य,
अवश्य ये-उपदेश
वैशिष्ट्यपाली आपूरयमाण सद्गुरुर निर्द्देशेर साथे
संगतिशील ओ आपूरणी नयको–
ता' कखनओ अनुसरणीय नय; ..... (–आ0वि0वा0सं0–185)

ठाकुर को प्यार करने वाला ठाकुर के कुत्ता को भी प्यार करता है, गुण-सम्पन्न नहीं होने पर भी पुरुषोत्तम-वंशधर हमारी श्रद्धा के पात्र हैं किन्तु ठाकुर के नीति-निर्देश के खिलाफ उनकी कोई भी बात माननीय नहीं है।

देखा याय –
सत्यनारायण यिनि,
अस्तिर परम उद्धाता यिनि,
वर्द्धनार जीयन्त वर्त्म यिनि, –
तिनि यखन अवतीर्ण हन,
.....
वाक्य, व्यवहार ओ आचरणेर भितर-दिये,
शयतानओ तखन ता'र जलुसवाणी दिये
जीवनवृद्धिर मूले कुठाराघात करे –
सत्ता-सम्बर्द्धनी जनन-कृष्टिते
अपघात हेने,
आर, मानुषउ तखन विभ्रान्त ह'ये
सेइ दिके गड़िये प'ड़ते् चाय–
सत्ताके विपन्न क'रेओ
अज्ञतार तामस व्यभिचारे ;
यदि धीमान् हओ,
बुझे चल।' (–आदर्श विनायक, वाणी संख्या–73)

अपने पैगम्बरों की वाणियों को विकृत कर Catholic church और इस्लामिक-संगठनों ने धर्म के नाम पर देश-दुनिया को बरवाद कर दिया है, सत्संग में पनप रही विकृतियों को यदि नहीं रोका गया तो प्रभु की नीतियों को विकृतकर, सत्संग के ये Concillor of Satan समाज को बरवाद कर देंगे। ठाकुर कहते हैं– '..... 'मामेकं शरणंव्रज' माने– एक आमाके रक्षा क'रे चल, आमार नीति-निर्देश रक्षा क'रे चल, ता'यदि कर, तबे आमि तोमाके रक्षा करब..... ।' (–आ0प्र0, 9/28.06.1947) किन्तु सत्संग में ठाकुर के नीति-निर्देश की रक्षा के बदले 'अमरेन्द्री-ठाकुर' और 'बवाई-ठाकुर' के चक्कर में भोले-भाले श्रद्धालुभक्त ठाकुर से दूर होकर प्रगतिहारा बन रहे हैं। '....रामकृष्णी-विवेकानन्द भाल, विवेकानन्दी-रामकृष्ण भाल नय। ठीकमत परिवेशण दरकार..... ।' (–आ0प्र0, 18/14.10.1948) युगादर्श प्रभु-अनुकूल के स्वार्थ की रक्षा में अपने जीवन की आहुति देना पुण्य है।

इष्टगुरुर स्वार्थरक्षा
प्राण गेलेओ तुइ छाड़िस ना,
सब पापेतेइ त्राण पावि तुइ
ऋषिर वाणी भुलिस ना। (–अनु0,खंड–1, आदर्श–26)

पुरुषोत्तम की वाणियों की विकृत व्याख्या जीवन क्षय करने वाला कुकर्म है।'.....कोन महापुरुषेर वाणीर विकृत-व्याख्या चुरि इत्यादिर थेके वेशी पाप, कारण ता आमादेर Lord (प्रभु) थेके बंचित करे ..... ।'(–आ0प्र0. 14/14.10.1948) युगादर्श की वाणियों की विकृत-व्याख्या करनेवाले devil को हमें demolish करना ही होगा। इसे चुपचाप सहलेना महापाप है, ... 'अज्ञतावशतः यारा अन्याय करे, तारा पापी से-विषय कोन सन्देह नेइ, किन्तु तादेर चाइते वेशी पापी हच्छे तारा, यारा जेने-बुझेओ दुर्ब्बलतावशतः ऐ अन्यायके प्रश्रय दिये चले। यारा कापुरुष तारा आर या'होक धार्मिक नय । Evil (असत्) के ताड़ावार जन्य यारा निजेदेर exert (उद्यत) करते पारे ना तारा क्लीवत्वदुष्ट..... ।' (–आ0प्र0, 12/3.6.1948)। पुरुषोत्तम कोई ism लेकर नहीं आते, वे facts लेकर आते हैं और उनके तिरोधान के बाद उनके कपटी-भक्त उनकी नीतियों की अपव्याख्या द्वारा सम्प्रदाय बनाकर Spiritual neudity को बढ़ाते हुए समाज को बरवाद करते हैं। भजनावेग-सन्दीप्त कृति-सम्वेग ही भक्ति है, हनुमान की तरह ऊर्ज्जी-भक्ति चाहिए, अतः with all our passion हमें अपने इष्ट-ठाकुर में interested होना ही होगा। भयोद्वेग से बचने के लिए, सुख-शांति की प्राप्ति के लिए और '**अनुकूल-राज्य**' की स्थापना हेतु ठाकुर के नीति-निर्देश की रक्षा लोकमंगल की अनिवार्यता है। 'असत्-निरोध करते गिये, विरोध-सृष्टि करिओ ना'- असत्-निरोध का अर्थ विरोध-सृष्टि नहीं है। हमें यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि सभी दीक्षित हमारे गुरुभाई हैं और पुरुषोत्तम-वंशधर सभी महानुभाव हमारी श्रद्धा के पात्र हैं। द्वेषहीन, मैत्रीभावापन्न और सद्य रहते हुए प्रति-प्रत्येक की कल्याण-कामना सहित, हमें अपने वाक्-व्यवहार और प्रसार में प्रभु के नीति-निर्देश की रक्षा करनी है। विद्वान-भक्त स्व0 चित्रनारायण लाल की प्रेरणा से प्रभु की वाणियों के अविकृत-अभ्यास-प्रसार हेतु समष्टिपुर से 'राधारश्मि' पत्रिका का प्रकाशन किया गया, वाणी-परिवेषण-यज्ञ की श्रृंखला चलाई गई, श्रीअनुकूलवचनामृत ग्रन्थमाला में श्रुति-अंक, परिवार-अंक, जीवन-अंक, पथ-निर्देश, सिद्धि-अंक, शिक्षा-प्रसंग, विवाह प्रसंग (2 खंड), नारी धर्म (2 खंड) आदि ग्रन्थों का प्रकाशन किया गया। अपने याजन और धर्माभ्यास द्वारा हमें दुनिया को आज यह समझाना होगा कि पूरयमाण युगादर्श प्रभु-अनुकूल का अनुसरण ही पूर्व्वतन गुरुओं की पूजा है तथा युगादर्श को अस्वीकार कर, किया जानेवाला सभी कर्म 'वेद-विगर्हित' होने के कारण हमारी अवनति का आमंत्रक है, highest knowledge और highest fulfilment वर्त्तमान पुरुषोत्तम में ही होता है, अतः जिसी समय हम युगादर्श को छोड़ते हैं, human perfection के latest and best manifestation के impulse से हम वंचित होने लगते हैं, हमारा evolution hampered होता है, हम back dated होने लगते हैं, हमारा progressiveness blocked होता है। पुरुषोत्तम का अवतरण मनुष्य के लिए बड़े भाग्य की बात है, धर्म का अविकृत अनुशरण ही धर्माचरण है –

आमि ये-आदर्श
तोमादेर सामने स्थापन करेछि,
आमि ये–आदर्शेर कथा
तोमादेर काछे व'लेछि,
ता'ते निष्ठा, अनुराग
ओ अनुसरणेर –

अल्पइ हो'क, विस्तरइ हो'क –
यतखानि आन्तरिक्ता निये
सक्रिय अभिव्यक्ति देवे
इष्टानुग सहयोग-स्वार्थे स्वार्थान्वित ह'ये,
तोमादेर ध्वंस क'रते पारवे ना केउ
दुनियाय,
सावाड़े निये येते पारवे ना केउ
दुनियाय,
.....
आर, एटा यदि भेंगे दाओ
वा भेंगे जाय,
राखते ना पार ध'रे, –
कृति सौध भेंगे गिये –
पर्य्यूदस्त कृष्टि
विभ्रान्तिते टुकड़ो-टुकड़ो ह'ये –
संहति ओ सहयोग
विध्वस्त ओ विकृत ह'ये
संहतिहारा एइ जैवी-संस्थितिर
सर्व्वनाशे आत्मनिमज्जन करा छाड़ा
उपायइ थाकवे ना। (–आदर्श विनायक, वाणी सं0–1)

'**अनुकूलं शरणं गच्छामि**' तथा '**अनुकूले रसूलअल्लाह**' का जयघोष, भारत की सीमा लांधकर आज विश्व में चतुर्दिक फैल रहा है तथा राजमुन्द्री, हैदरावाद, चेन्नई, बंगलोर, नई दिल्ली, लंदन, न्यूयार्क आदि शहरों में सत्संग-आश्रम की शाखा भी स्थापित हो रही है किन्तु प्राच्य और प्रतीच्य को नियंत्रित करने वाले प्रभु-अनुकूल के नीति-निर्देश से सूई के नोक भर भी विच्युति व्यक्तिगत जीवन को प्रगतिहारा बनाकर हमारे mission को प्रथभ्रष्ट कर देगी।

'.....ताइ, महत् ह'ये थाकुन
तोमार आदर्शपुरुष,
आर, तिनि चिरदिन
तॉ'र वाणीर भितर-दिये
तोमार जीवन चलनार
नियामक ह'ये थाकुन,
ऐ वाद वा वाणीइ हो'क
तोमार पाथेय,
तॅदनुग अनुशीलना
सम्बल हो'क तोमार,
कल्याणेर अढ़ेल उत्स ह'ये थाकुन
तिनि –, तोमार अन्तर-द्युतिते।'
(–आदर्श विनायक, वाणी सं0– 137)

'धर्म्मो रक्षति रक्षितः–रक्षित-धर्म ही आदमी की रक्षा करता है और सत्-पुरुषों के सत्आचरण में ही धर्म रक्षित रहता है, हम सभी सत्संगी यह संकल्प लें कि– इष्टनिदेश व्यतिक्रमी
कोन कथाइ सुनवि ना,
समर्थनओ क'रवि ना ता'
आचार-व्यवहारओ क'रवि ना। (–अनु0 खंड–4, साधना–26)

देश-दुनिया में Kingdome of Heaven की स्थापना हेतु, प्रति-प्रत्येक की कल्याण-कामना सहित, सबकुछ को Manage and manipulate करते हुए सुखधाम-पूरणकाम प्रभु-अनुकूल के नीति-निर्देश का अविकृत अभ्यास- प्रसार हम सभी सत्संगियों का जीवन-यज्ञ है। आवें! एकादर्शानुसरण के इस यज्ञानल में हम अपने जीवन की आहुति दें। शांति। शांति ।। शांति ।।।

बार-बार वर माँगहुँ कृपा करहुँ अनुकूल।
पदसरोज अनपायनी भक्ति परम सुखमूल।।

– प्रो० अशोक कुमार पाण्डेय्
ग्राम+पो०– बान्दे, भाया– पटोरी (समस्तीपुर) बिहार–848504
M–09801846468, 08873877792